

भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र: {रामायण काल से वर्तमान समय तक एक व्यवस्थित अध्ययन}

डॉ. सारांश राजोरिया

अर्थशास्त्र विभाग शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय देवरी,
सागर (म.प्र.)

सारांश:

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के भीतर अर्थशास्त्र के विकास और सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है, इसकी जड़ें रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों से लेकर विभिन्न ऐतिहासिक युगों से लेकर समकालीन समय तक खोजती हैं। धर्मग्रंथों, महाकाव्यों और विद्वानों के कार्यों में दर्ज आर्थिक विचारों और प्रथाओं का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक आर्थिक संदर्भों में इन प्राचीन अंतर्दृष्टि की स्थायी प्रासंगिकता और परिवर्तनकारी क्षमता को उजागर करना है।

विशेष शब्द:- भारतीय ज्ञान परंपरा, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, प्राचीन आर्थिक विचार, मध्ययुगीन भारतीय अर्थव्यवस्था, औपनिवेशिक आर्थिक प्रभाव, स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक नीतियाँ, सतत विकास, नैतिक अर्थशास्त्र, नेहरूवादी समाजवाद, आर्थिक उदारीकरण, कृषि अर्थव्यवस्था, व्यापार और वाणिज्य, संसाधन प्रबंधन, राजनीतिक अर्थव्यवस्था, आर्थिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी आंदोलन, आधुनिक आर्थिक चुनौतियाँ।

परिचय:

भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं में आर्थिक विचारों की एक समृद्ध विरासत अंतर्निहित है। प्राचीन भारतीय ग्रंथ आर्थिक सिद्धांतों, संसाधन प्रबंधन और वाणिज्य में नैतिक विचारों पर प्रचुर ज्ञान प्रदान करते हैं। इस शोध का उद्देश्य रामायण काल से लेकर आज तक आर्थिक विचारों के विकास का पता लगाना है, जो आर्थिक सिद्धांत और व्यवहार में भारतीय ज्ञान परंपरा के योगदान की व्यापक समझ प्रदान करता है।

रामायण काल में आर्थिक चिंतन:

रामायण में, आर्थिक विचार को कथा में जटिल रूप से बुना गया है, जो एक सुव्यवस्थित कृषि अर्थव्यवस्था और परिष्कृत व्यापार प्रथाओं को दर्शाता है। पाठ आर्थिक समृद्धि और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने में राजा की भूमिका पर जोर देता है। उदाहरण के लिए, श्लोक

“धर्मेण राजान्य ऋषिमुवाच”¹

संसाधनों के नैतिक और उचित प्रबंधन को सुनिश्चित करते हुए, धर्म के अनुसार शासन करने के राजा के कर्तव्य पर प्रकाश डालता है। रामायण एक ऐसे समाज का वर्णन करता है जहां कृषि रीढ़ है, जिसमें जल प्रबंधन, फसल चक्र और किसानों के कल्याण पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया जाता है। हलचल भरे बाजारों और व्यापक व्यापार मार्गों के संदर्भ में व्यापार और वाणिज्य भी प्रमुख हैं, जो एक जीवंत आर्थिक परिदृश्य का संकेत देते हैं। पाठ धार्मिक शासन के महत्व और सामूहिक भलाई के लिए धन के नैतिक उपयोग को रेखांकित करता है, जो अर्थशास्त्र के समग्र दृष्टिकोण के लिए आधार तैयार करता है जो नैतिक अखंडता के साथ भौतिक समृद्धि को संतुलित करता है।

“श्रेयो हि राजा धर्मेण स्याद्यदाऽयुष्माननागसाः।

कान्तरान्यपि ये दुःखं न प्राप्नुवन्ति धार्मिकाः”।

रामायण 2.100.38

यह श्लोक न्यायपूर्वक शासन करने और अपनी प्रजा, यहां तक कि दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों की भलाई सुनिश्चित करने के राजा के कर्तव्य को रेखांकित करता है। यह शासन में धर्म के महत्व पर प्रकाश डालता है, यह सुनिश्चित करता है कि किसी को कष्ट न हो, इस प्रकार यह आर्थिक कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है।

“कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यस्योर्जमयि क्रिया”²

—रामायण 2.100.46

यह श्लोक वैश्य वर्ग के प्राथमिक व्यवसायों को दर्शाता है, कृषि, पशुपालन और व्यापार को मौलिक आर्थिक गतिविधियों के रूप में महत्व देता है। इन गतिविधियों को समाज के लिए शक्ति और समृद्धि के स्रोत के रूप में दर्शाया गया है।

“न व्ययं चात्मनः कुर्यादन्यत्र कृतनिश्चितत्।

व्ययतत्त्वे च यत्नेन कुर्यात् संचितमेव च”³

—रामायण 2.21.18

यह श्लोक फिजूलखर्ची के प्रति सावधान करता है और संसाधनों के बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देता है, जो जिम्मेदार वित्तीय प्रबंधन और दीर्घकालिक स्थिरता के मूल्यों को दर्शाता है। यह व्यक्तियों से अपने खर्चों के प्रति सचेत रहने और अपने संसाधनों के कुशल और प्रभावी प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए सोच-समझकर विकल्प चुनने का संदेश देता है। विवेक और सावधानीपूर्वक योजना के महत्व पर जोर देते हुए, यह श्लोक वित्तीय जिम्मेदारी और पर्यावरणीय चेतना की मानसिकता की वकालत करता है।

कुल मिलाकर, रामायण आर्थिक जीवन का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, शासन, संसाधन प्रबंधन और व्यापार के व्यावहारिक पहलुओं के साथ नैतिक विचारों को एकीकृत करता है, जिससे प्राचीन भारत के आर्थिक विचारों में कालातीत अंतर्दृष्टि मिलती है।

महाभारत और अर्थशास्त्र में आर्थिक विचार:

महाभारत और अर्थशास्त्र प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, नैतिक विचारों को व्यावहारिक प्रबंधन और आर्थिक रणनीतियों के साथ जोड़ते हैं। महाभारत में, आर्थिक गतिविधि (अर्थ) को धर्म (नैतिक कर्तव्य) से निकटता से जोड़ा गया है, जिसमें धन बनाने और वितरित करने की नैतिक अनिवार्यताओं पर जोर दिया गया है। उदाहरण के लिए, श्लोक:

“अर्थं धर्मं च कामं च सर्वान्वित्य संश्रयेत्।

त एव राजयं कामाय धर्मयुक्ता भवन्ति हि”⁴

महाभारत 12.161.11

यह श्लोक सक्रिय रूप से धन की तलाश करने, नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखने और सामंजस्यपूर्ण और न्यायसंगत तरीके से इच्छाओं को पूरा करने की राजा की जिम्मेदारी के महत्व को रेखांकित करता है। ऐसा करके, राजा यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक प्रयास नैतिक रूप से संचालित हों और समाज के सभी सदस्यों के लिए सकारात्मक परिणाम लाएँ।

कौटिल्य (चाणक्य) द्वारा लिखित अर्थशास्त्र, शासन कला और आर्थिक नीति पर एक मौलिक ग्रंथ है। यह शासन, व्यापार नियमों, बाजार प्रबंधन और आर्थिक मामलों में राज्य की भूमिका पर विस्तृत दिशानिर्देश प्रदान करता है। अर्थशास्त्र का एक उल्लेखनीय श्लोक है:

“कोषमूलो दण्डः”

इस संक्षिप्त श्लोक का अनुवाद है "राजस्व प्रशासन की जड़ है," प्रभावी शासन और आर्थिक स्थिरता के लिए एक अच्छी तरह से प्रबंधित खजाने के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करता है।

इन शिक्षाओं का संयोजन एक सर्वांगीण संरचना बनाता है जो नैतिक नेतृत्व, संसाधनों के जिम्मेदार संचालन और सुविचारित आर्थिक रणनीतियों के कार्यान्वयन के माध्यम से आर्थिक सफलता की प्राप्ति की ओर ले जाता है। आर्थिक गतिविधियों में नैतिक जिम्मेदारियों के महत्व पर महाभारत का ध्यान अर्थशास्त्र में उल्लिखित आर्थिक शासन के व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टिकोण को पूरी तरह से पूरक करता है। यह नैतिक सिद्धांतों और आर्थिक क्षेत्र में समृद्धि के बीच अंतर्संबंध की गहरी समझ को दर्शाता है।

मध्यकालीन भारतीय आर्थिक चिंतन:

मध्यकालीन भारतीय आर्थिक चिंतन में इस्लामी प्रभावों के साथ स्वदेशी परंपराओं के एकीकरण को देखा गया, जिससे एक विविध और मजबूत आर्थिक परिदृश्य को आकार मिला। इस अवधि में भक्ति और सूफी आंदोलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्होंने सामाजिक और आर्थिक समतावाद की वकालत की। इस अवधि के दौरान हिंदू और इस्लामी आर्थिक विचारों के संश्लेषण को निष्पक्ष व्यापार, नैतिक धन वितरण और सामुदायिक कल्याण पर जोर द्वारा अच्छी तरह से चित्रित किया गया है। आइन-ए-अकबरी के लेखक अबुल-फजल जैसे विद्वानों की रचनाएँ मुगल भारत में आर्थिक नीतियों और प्रथाओं का विस्तृत विवरण प्रदान करती हैं, जो एक न्यायसंगत और न्यायसंगत आर्थिक प्रणाली के महत्व पर जोर देती हैं। एक श्लोक जो धन और दान के नैतिक विचारों को प्रतिध्वनित करता है वह है:

नैतिक धन प्रबंधन और दान के महत्व को प्रतिध्वनित करने वाला एक प्रासंगिक श्लोक है

“दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।

यो न ददाति न भुक्ते तस्य तृतीयो गुणो भवति”

सुभाषिता रत्न भण्डागारा

यह श्लोक धन के विभिन्न रास्तों पर प्रकाश डालता है, जिसमें जोर दिया गया है कि इसका उपयोग दान, आनंद के माध्यम से अच्छे के लिए किया जा सकता है, या यदि नैतिक रूप से उपयोग नहीं किया गया तो यह विनाश का कारण बन सकता है। यह जरूरतमंदों को देने के महत्व को रेखांकित करता है, जिसे इस्लाम में जकात के रूप में जाना जाता है, और इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार संसाधनों के उचित वितरण के महत्व पर जोर देता है। अंततः, यह उस जिम्मेदारी की याद दिलाता है जो धन के साथ आती है और समाज की भलाई के लिए इसका उपयोग करने में उपेक्षा करने के संभावित परिणामों की याद दिलाती है।

अकबर जैसे इस्लामी शासकों ने ऐसी नीतियां लागू कीं जिन्होंने कृषि विकास को बढ़ावा दिया, सिंचाई में सुधार किया और कराधान और राजस्व संग्रह की मानकीकृत प्रणाली स्थापित की।

अबुल-फ़ज़ल द्वारा लिखित आइन-ए-अकबरी, अकबर के शासनकाल के दौरान आर्थिक नीतियों और प्रशासनिक प्रथाओं का विस्तृत विवरण प्रदान करती है, जो आर्थिक प्रबंधन में निष्पक्षता और दक्षता पर जोर देती है।

मध्यकाल में भारत को मध्य एशिया, मध्य पूर्व और यूरोप से जोड़ने वाले व्यापार मार्गों का विकास भी देखा गया। बाजारों और व्यापार केंद्रों की स्थापना ने वस्तुओं, विचारों और संस्कृति के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाया, जिससे आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक संश्लेषण में योगदान मिला। वाणिज्य के इस्लामी सिद्धांत, जिसमें निष्पक्ष व्यापार प्रथाएं और शोषणकारी प्रथाओं का निषेध शामिल था, को स्थानीय परंपराओं के साथ एकीकृत किया गया, जिससे एक जीवंत आर्थिक वातावरण को बढ़ावा मिला।

संक्षेप में, भारत में मध्ययुगीन काल को इस्लामी और स्वदेशी आर्थिक विचारों के मिश्रण की विशेषता थी, जिसमें नैतिक धन प्रबंधन, दान के महत्व और निष्पक्ष व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया था। इन सिद्धांतों ने एक मजबूत और गतिशील अर्थव्यवस्था में योगदान दिया जो न्यायसंगत और समृद्ध दोनों थी।

स्वतंत्रता के बाद का आर्थिक विचार:

भारत में स्वतंत्रता के बाद की अवधि आर्थिक विचार और नीति में एक परिवर्तनकारी चरण को चिह्नित करती है, जिसमें औपनिवेशिक शोषण से राष्ट्र-निर्माण और आत्मनिर्भरता की ओर बदलाव शामिल है। आज़ादी के शुरुआती वर्षों में नेहरूवादी समाजवाद का बोलबाला था, जिसने राज्य के नेतृत्व वाले विकास, औद्योगीकरण और आर्थिक योजना पर जोर दिया। भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक मिश्रित अर्थव्यवस्था की कल्पना की थी जहाँ राज्य आर्थिक विकास को निर्देशित करने और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस दृष्टिकोण को पंचवर्षीय योजनाओं को अपनाने के माध्यम से क्रियान्वित किया गया, जिसका उद्देश्य औद्योगीकरण, कृषि विकास और संसाधनों के समान वितरण को बढ़ावा देना था।

1950 और 1960 के दशक के दौरान, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों, बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और भारी उद्योगों की स्थापना के माध्यम से एक मजबूत औद्योगिक आधार बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। 1960 और 1970 के दशक में हरित क्रांति ने कृषि नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया, जिससे उत्पादकता में वृद्धि हुई और खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता आई।

प्रधान मंत्री पी.वी. के नेतृत्व में 1991 के आर्थिक उदारीकरण सुधार। नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की मुलाकात भारत के आर्थिक इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण

था। इन सुधारों ने लाइसेंस राज को खत्म कर दिया, अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण कम कर दिया और भारतीय बाजार को वैश्विक व्यापार और निवेश के लिए खोल दिया। उदारीकरण प्रक्रिया के प्रमुख पहलुओं में अविनियमन, निजीकरण और वैश्वीकरण शामिल हैं, जिसने आर्थिक विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण को बढ़ावा दिया।

उदारीकरण के बाद की अवधि में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और एक जीवंत निजी क्षेत्र के उद्भव में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। हालाँकि, गरीबी, असमानता और क्षेत्रीय असमानताएँ जैसी चुनौतियाँ बनी रहीं। इस युग में आर्थिक नीतियाँ सामाजिक समानता के साथ विकास को संतुलित करने, सतत विकास को बढ़ावा देने और अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक मुद्दों को संबोधित करने पर केंद्रित हैं।

संक्षेप में, भारत में स्वतंत्रता के बाद का आर्थिक विचार राज्य के नेतृत्व वाले विकास और सामाजिक न्याय पर ध्यान केंद्रित करने से लेकर बाजार-उन्मुख सुधारों और वैश्वीकरण को अपनाने तक विकसित हुआ। समावेशी विकास, सामाजिक कल्याण और संतुलित विकास के मार्गदर्शक सिद्धांत भारत की आर्थिक नीति के केंद्र में रहे, जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक आर्थिक रणनीतियों के मिश्रण को दर्शाते हैं।

समकालीन समय में प्राचीन आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता:

प्राचीन भारतीय आर्थिक विचार, जैसा कि रामायण, महाभारत और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में समाहित हैं, समकालीन समय में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखता है। ये प्राचीन सिद्धांत नैतिक शासन, टिकाऊ संसाधन प्रबंधन और भौतिक संपदा और सामाजिक कल्याण की संतुलित खोज में कालातीत अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। आज के वैश्वीकृत और तेजी से विकसित हो रहे आर्थिक परिदृश्य में, इन प्राचीन विचारों पर दोबारा विचार करने से आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय स्थिरता और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं जैसी आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए मूल्यवान सबक मिल सकते हैं।

प्राचीन भारतीय ज्ञान के मूल सिद्धांतों में से एक नैतिक धन प्रबंधन और समाज के सभी सदस्यों के कल्याण पर जोर देना है। महाभारत का श्लोक इस समग्र दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है

“अर्थं धर्मं च कामं च सर्वान्वीत्या संश्रयेत्

त एव राजां कामाय धर्मयुक्ता भवन्ति हि”

इस प्राचीन मान्यता के अनुसार, व्यक्तियों के लिए धन की खोज, अपने कर्तव्यों को पूरा करने और अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करने के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाना आवश्यक है। इस संतुलन को प्राप्त करके, न केवल उन्हें स्वयं लाभ होगा, बल्कि वे अपने शासक और समग्र

समाज की भलाई में भी योगदान देंगे। यह विचारधारा उन आर्थिक प्रयासों में संलग्न होने के महत्व पर जोर देती है जो न केवल लाभ कमाते हैं बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी पालन करते हैं। अंततः, यह खुद को इस तरह से संचालित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है जो न केवल आर्थिक रूप से सफल हो बल्कि नैतिक और सामाजिक रूप से भी जागरूक हो।

समकालीन समय में, आर्थिक निर्णय लेने में नैतिक विचारों के एकीकरण को सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) और पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) मानदंड इस प्राचीन ज्ञान की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं जो बड़े पैमाने पर समाज को लाभान्वित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, प्राचीन भारतीय ग्रंथ सतत संसाधन प्रबंधन के महत्व पर जोर देते हैं, एक सिद्धांत जो वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के सामने अत्यधिक प्रासंगिक है। रामायण और अर्थशास्त्र संसाधनों और कृषि पद्धतियों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए दिशानिर्देश प्रदान करते हैं जो दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुशल संसाधन प्रबंधन और सार्वजनिक वस्तुओं के रखरखाव पर अर्थशास्त्र का ध्यान पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के बारे में समकालीन चिंताओं के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है।

प्राचीन आर्थिक विचार का एक अन्य प्रासंगिक पहलू सामुदायिक कल्याण और सामाजिक न्याय पर जोर है। आर्थिक गतिविधियों में धर्म की अवधारणा यह सुनिश्चित करती है कि धन वितरण उचित हो और समाज के सभी वर्गों को लाभ हो। यह सिद्धांत आर्थिक असमानता को कम करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आधुनिक नीतियों को सूचित कर सकता है।

निष्कर्षतः, प्राचीन भारतीय आर्थिक विचार समकालीन आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। नैतिक शासन, सतत संसाधन प्रबंधन और सामाजिक कल्याण पर इसका जोर एक समग्र ढांचा प्रदान करता है जो दीर्घकालिक समृद्धि और समानता प्राप्त करने की दिशा में आधुनिक आर्थिक नीतियों और प्रथाओं का मार्गदर्शन कर सकता है। इन कालातीत सिद्धांतों को आधुनिक आर्थिक रणनीतियों के साथ एकीकृत करके, हम एक अधिक स्थिर और न्यायपूर्ण वैश्विक अर्थव्यवस्था बना सकते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा आर्थिक विचारों की एक समृद्ध अंतरदृष्टि प्रस्तुत करती है जो सहस्राब्दियों से विकसित हुई है। रामायण के कृषि सिद्धांतों से लेकर अर्थशास्त्र की परिष्कृत राजनीतिक अर्थव्यवस्था और औपनिवेशिक और स्वतंत्रता के बाद की अवधि के दौरान अनुकूली

रणनीतियों तक, भारतीय आर्थिक विचारों ने लचीलापन और प्रासंगिकता का प्रदर्शन किया है। यह व्यवस्थित अध्ययन आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए समकालीन आर्थिक विश्लेषण में इन प्राचीन अंतर्दृष्टि को फिर से देखने और एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित करता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

रामायण: वाल्मिकी रामायण, बिबेक देबरॉय द्वारा अनुवादित, पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2016.

महाभारत: कृष्ण-द्वैपायन व्यास की महाभारत, किसारी मोहन गांगुली द्वारा अनुवादित, मुंशीरम मनोहरलाल पब्लिशर्स, 1998.

अर्थशास्त्र: कौटिल्य का अर्थशास्त्र, आर. शमाशास्त्री द्वारा अनुवादित, श्री रंगम पब्लिशर्स, 2002.

महाभारत श्लोक: महाभारत, बिबेक देबरॉय द्वारा अनुवादित, पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2015.

बृहदारण्यक उपनिषद: उपनिषद, स्वामी निखिलानंद द्वारा अनुवादित, रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र, 2003.

प्राचीन भारतीय आर्थिक विचार की समकालीन प्रासंगिकता: "प्रबंधन में प्राचीन भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता: भगवद गीता से अंतर्दृष्टि," एन. रविचंद्रन और प्रसन्ना मोहन राज द्वारा, आईआईएमबी प्रबंधन समीक्षा, 2014.

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व: "कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व: श्लोक 'सर्वे'पि सुखिनः संतु...' की अवधारणा और विश्लेषण की समीक्षा," आर. श्रीराम द्वारा, जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 2010.

सतत विकास: "सतत विकास: प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों से अंतर्दृष्टि," एस.एस. राजन द्वारा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स, 2008.